रौशन सितारे

सहाबए किराम[रज़ि0] और उम्मत की इस्लाह करने वालों की बातें और उनके वाक्या, जिनसे इल्म और तालीम का काम करने वालों को रौशनी हासिल होगी और तालीम, तदरीस और तर्बियत के मायने को समझने, उसके मक़सद को जानने और उसके हासिल करने की कोशिश करने के लिए रहनुमाई का काम करेगें। नीचे संक्षिप्त तौर पर दी जा रही हैं :

हज़रत अबूबक्र रज़ि0

''इल्म पैग़म्बरों की मीरास है और माल काफ़िरों, फ़िरऔन व क़ारून वग़ैरह की''।

हज़रत उमर रज़ि0

''दुनिया की तलब करने वाले को इल्म सिखाना डाकू के हाथ तलवार बेचना है''।

हज़रत उस्मान रज़ि0

''बेकार है वह इल्म जिस पर अमल न किया जाए''।

हज़रत अली रज़ि0

''शराफ़त अक़्ल व अदब से है न कि माल व नसब से''।

मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी रह0

''दारुल उलूम से फ़राग़त के बाद इस मदरसे के तलबा, सरकारी मदरसों में जाकर आधुनिक तालीम हासिल करे तो उनके कमाल में यह बात ज़्यादा मुफ़ीद होगी''।

सर सैयद अहमद खाँ रह0

''आगे देखो, आधुनिक इल्म सीखो और पुराने लेख जिनकी अब कोई अहमियत और क़द्र बाक़ी न रह गई हो, उनके अध्ययन में वक्त बर्बाद न करो''।

अल्लामा शिबली रह0

''यह हम ने बार-बार कहा है, अब फिर कहते हैं कि हम मुसलमानों के लिए न सिर्फ़ अंग्रेज़ी मदरसों की तालीम काफ़ी है, न पुरानी अरबी मदरसों की, हमारे दर्द का इलाज माजून मुरक्कब है, जिसका एक हिस्सा पूरबी है और दूसरा पश्चिमी''।

अल्लामा इक़बाल रह0

''इल्म से मेरी मुराद वह इल्म है, जिसका दारोमदार हवास (मस्तिष्क) पर हो। आम तौर पर मैंने इल्म का शब्द उन्हीं मायनों में इस्तेमाल किया है। इस इल्म से एक तबई (भौतिक) क़ुव्वत हाथ आती है, जिसको दीन के मातेहत रहना चाहिए अगर दीन के मातेहत न रहे तो सिर्फ़ शैतानियत है''।

गाँधी जी

''गाँधी जी की नज़र में तालीम के बुनियादी उसूल ये हैं:

- तालीम मादरी ज़बान में दी जाए।
- अक्षरों की पहचान को तालीम नहीं कहा जा सकता।
- तालीम बच्चे के अन्दर इन्सानी खूबियों को परवान चढ़ाती है।
- तालीम बच्चे के जिस्म, दिल दिमाग़ और रूह के लिए मुफ़ीद हो।
- तालीम इस तरह दी जाए कि नौजवानों को रोज़गार मिल जाए।''

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह0

''तालीम का सिर्फ़ एक मक़सद रोज़ी और रोटी कमाना नहीं होना चाहिए, बल्कि तालीम से शख़्सियत को बनाने का काम भी लिया जाए, और यही तालीम का सबसे फ़ायदेमंद पहलू है और इसी से आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था भी बेहतर हो सकेगा''।

मौलाना सैयद अबुल आला मोदूदी रह0

''इमामत का दामन हमेशा इल्म से वाबस्ता रहेगा। इन्सान को एक जीव की हैसियत से ज़मीन की ख़िलाफ़त मिली ही इल्म की वजह से है। इसको समअ (सुनने), बसर (देखने) और दिल तीन चीजें ऐसी दी गई हैं, जो दूसरी ज़मीन की मख़्लूक़ात को या तो नहीं दी गई या उसकी निसबत कमतर दी गई हैं। इसलिए वह इस बात का अहल हुआ कि दूसरी मख़्लूक़ात पर सारी कायनात के ख़ुदा का .ख़लीफ़ा बनाया जाए। अब ख़ुद इस जीव में से जो गरोह इल्म की ख़ूबी में दूसरे गरोहों से आगे बढ़ जाएगा, वह इसी तरह इन सब का इमाम बनेगा जिस तरह इन्सान, इन्सान होने की हैसियत से दूसरी सारी ज़मीनी जीवों पर इसी चीज़ की वजह से खलीफ़ा बनने का अहल हुआ है''।

डॉ0 ज़ाकिर हुसैन (साबिक़ सदर जमहूरिया-ए-हिन्द)

''और अगर आप अपनी क़ौमी ज़िन्दगी की मौजूदा पस्ती (पतन) पर मुत्मइन हैं तो मैं आपको ख़ुशख़बरी देता हूँ कि आप सानवी मदरसे ही क्या आपका सारा तालीमी व्यवस्था बिल्कुल ठीक है। इसमें ज़रा तबदीली न कीजिए। वह समाज में उथली तकलीद, मज़हब में खोखली रस्में, सियासत में महकूमियत पसन्दी के पैदा करने, इल्म में ज़ौक तहक़ीक़ से

और फुनून में ज़ौक (चाव) तहक़ीक से नौजवानों को वंचित करने और कमज़ोर जिस्म, बे-नूर दिमाग़ और बे-सोज़ दिल पैदा करने के निहायत कामयाब कारख़ाने हैं''।

मौलाना अबूल हसन अली नदवी रह0

''दीन की एक न ख़त्म होने वाली हक़ीक़त है, जिसमें किसी तब्दीली की ज़रूरत नहीं, लेकिन इल्म एक फलने, फूलने वाला पेड़ है। जिसका फलना फूलना बराबर जारी रहेगा''।

नेल्सन मण्डेला

''तालीम सबसे बड़ा हथियार है, जिसका इस्तेमाल दुनिया को बदलने के लिए किया जा सकता है''।

भारत रत्न ए पी जी अब्दुल कलाम (साबिक सदर जमहूरिया-ए-हिन्द)

''सीखने का अमल तख़्लीक़ी सलाहियत को पैदा करना है, तख़्लीक़ फ़िक्र की दैन है। फ़िक्र इल्म की तरफ़ राग़िब करता है और इल्म आपको बड़ा बनाता है''।

●●●

तालीम का मफ़हूम

तालीम का शाब्दिक अर्थ किसी को कुछ बताना, पढ़ाना, सीखना या सिखाने के हैं। यह लफ़्ज़ तदरीस का हम मायनी (समानार्थ) नहीं है। तदरीस सिर्फ़ दर्स देने और पढ़ाने तक महदूद हैं। तालीम का लफ़्ज़ बहुत व्यापक है। इसके मफ़हूम में तदरीस के साथ-साथ तदरीब यानी फ़ुनून में महारत पैदा करना, तादीब यानी अदब और सलीक़ा सिखाना और तर्बियत यानी बच्चे की सोई हुई सलाहियतों को निखारना और उनका नशु व नुमा करना भी शामिल है।

जब हम तालीम का लफ़्ज़ बोलते हैं तो हमारे ज़ेहन में मदरसे, स्कूल और कॉलेज का तसव्वुर उभरता है और छात्र, शिक्षक और किताब को ही तालीम समझ बैठते हैं। बेशक ये सब तालीम हासिल करने के साधन और उसके हिस्से और तत्व हैं और मदरसा, स्कूल रस्मी (Formal) तालीम के इदारे हैं। लेकिन बच्चे सिर्फ़ मदरसे और स्कूल, शिक्षक और किताबों से ही सब कुछ नहीं सीखते। बल्कि वो माहौल, घर, दोस्त, अहबाब, कुदरती मनाज़िर और दिन प्रति दिन के वाक़िए से भी बहुत कुछ सीखता है। इनके ज़रिए भी उसकी मालूमात में इज़ाफ़ा होता है। इसलिए ये सब तालीम के मफ़हूम में शामिल हैं। गोया कि हम कह सकते हैं कि जो कुछ हम नहीं जानते उसका जानना तालीम है। अब यह किसी भी उम्र में हो या किसी भी ज़रिए से हो। इसी लिए नबीए अकरम[सल0] ने फ़रमाया ''गोद से क़ब्र तक इल्म हासिल करो।''

●●●

शिक्षा का महत्व एवं लाभ

तालीम की अहमियत व अफ़ादीत (महत्व व लाभ) से अब किसी जाहिल को भी इन्कार नहीं, इस्लाम एक मात्र दीन है, जिसने इल्म हासिल करने को फ़र्ज़ क़रार दिया है। आप[सल0] ने फ़रमाया इल्म हासिल करना हर मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है। आप[सल0] ने इल्म हासिल करने के लिए चीन तक जाने यानी दूर दराज़ सफ़र करने की तलक़ीन फरमाई। आप[सल0] ने अपने सहाबा को ख़ास तौर पर अन्य क़ौमों की ज़बानें सिखने पर मुक़र्रर किया। आप[सल0] ने बदर की जंग के पढ़े लिखे क़ैदियों से इस शर्त पर रिहाई का वादा किया कि तुम में से जो पढ़ा लिखा है वो हमारे दस आदमी को पढ़ा दे। आप[सल0] को सबसे पहले अल्लाह तआला ने पढ़ने का हुक्म दिया। क़ुरआन ने इल्म वाले और बग़ैर इल्म वालों के बारे में साफ़ फ़रमाया दोनों अंजाम के एतबारे से बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने अपने नबी पर किताब उतारी, नबी ने इस किताब को लिखने का एहतमाम किया, आप के साथियों ने ख़ास तौर पर खुलफ़ाए राशिदीन यानी चारों ख़लीफ़ा ने उसकी नक़्ल करवाई और दूसरे जगहों पर भेजीं। ये सारी कवायद बग़ैर तालीम के मुमकिन नहीं। अगर इल्म की अहमियत व ज़रूरत नहीं होती तो किताब न उतारी जाती और न उसकी किताबत व तबाअत (छपाई) का एहतमाम किया जाता।

इतिहास गवाह है कि इल्म वाले ने ही हमेशा हुकूमत की है। हज़रत आदम[अले0] को फ़रिश्तों ने सज्दए ताज़ीमी सिर्फ़ इल्म ही की बिना पर किया था। हर दौर में अहले इक़्तदार (सत्ताधारी) अपनी जनता से ज़्यादा तालीम याफ़ता रहे हैं। मुसलमानों ने भी जब इल्म की शमा को रौशन रखा तो वे इलाक़ों पर इलाक़े फ़तह करते चले गए और आधी

से ज़्यादा दुनिया पर हुक्मरानी करने लगे। मुसलमानों का असल में वह सुनहरा दौर था जिसमें लेखक व कवि, अतिब्बा (वैद्य) व साइंसदां, हिसाबदाँ व जुग़राफ़ियादाँ पैदा हुए। मौसीक़ी की चीज़ों से लेकर जंगी सामान तक और मामूली इस्तेमाल की चीज़ों से लेकर मेडीकल यंत्र तक मुसलमानों ने ईजाद किए और एक मख़्लूक़ के लिए नफ़ा बख्श बने रहे। जन कल्याण का ही नतीजा था कि अल्लाह ने उन्हें पूरी दुनिया का इमाम बनाए रखा, मगर जब किताब ताक़ की ज़ीनत बन गई और क़लम फेंक दिए गए। सियाही सूख गई और ज़माने ने देखा कि अब मुसलमान क़ौम ख़्वाब .ख़रगोश में हैं तो उसने उनसे किताब, तख्ती, क़लम दवात सब कुछ छीन लिया और हुकूमत से बे-दख़ल करके ऐसी सज़ा दी कि उनके .ख़ून से समन्द्र लाल हो गए।

मुस्लिम समुदाय को अगर खोया हुआ वक़ार (मान सम्मान) हासिल करना है और अपनी अज़मत एवं महानता को पाना है तो तालीम के चिराग़ को रौशन करना होगा। इल्म के बग़ैर न वह अल्लाह की बन्दगी कर सकती है और न दुनिया की इमामत। अल्लाह का शुक्र है किसी हद तक मुसलमानों में इल्म के ताल्लुक़ से जागरूकता आई है, मगर यह जागरूकता आँखें मलने की तरह है। अल्लामा अबुल-मुजाहिद ज़ाहिद का कथन :

जो सोते है नहीं कुछ ज़िक्र उनका वो तो सोते हैं।
मगर जो जागते हैं उनमें भी बेदार कितने हैं।।

●●●

तालीम का मक़सद

कुछ तालीम के माहिरीन के बयान किए हुए ये मक़ासद हैं :

- तालीम का मक़सद मिसाली इन्सान की तकमील है। (पेन)
- तालीम का मक़सद पुरख़ुलूस नेकी के ज़रिए शादमानी का हुसूल है। (अरस्तु)
- तालीम से मुराद है मुकम्मल इन्सान की तर्बियत। (कॉमिन्स)
- तालीम से मुराद है शुऊरी (अक़्ली) या इरादे की मज़बूती का बढ़ना। (डेविडसन)
- तालीम एक हुनर है जिससे माहिर नहीं बल्कि इन्सान बनाए जाते हैं। (मानटेन)
- संगे मरमर के टुकड़े के लिए जिस तरह संग तराशी है वैसे ही इन्सानी रूह के लिए तालीम है। (एडिसन)
- तालीम का मक़सद खरी, पुरख़ुलूस, बेऐब (ख़ालिस) और पाक साफ़ ज़िन्दगी बसर करने के क़ाबिल बनाना है। (डँवल)

इसके अलावा तालीम के ये मक़सद हो सकते हैं :

- मुल्क का अच्छा शहरी बनाना।
- समाज का मुख़लिस ख़ादिम बनना।
- शख़्शियत की तकमील करना।
- इस क़ाबिल बनाना के वह ख़ानदान की किफ़ालत कर सके।

●●●

तालीम का मेयार (Quality Education)

मेयार या क्वालिटी का पैमाना क्या है। मेरे नज़दीक किसी काम को बेहतर तरीक़े से अंजाम देने का नाम मेयार है। भारत में अगर मेयार की बात की जाए तो एक मिसाल ताजमहल की सामने आती है, जो आपसे वाबस्ता है। देश में दूसरी इस जैसी मिसाल आज भी नहीं है। ताजमहल अपने मेयार की वजह से देश का एक अजूबा और दुनिया के सात अजूबों में शामिल है। यह हर लिहाज़ से एक ऊंचा मेयार की तामीर है। इसका मुक़ाबला दुनिया की कोई इमारत नहीं कर सकती। ताजमहल की सोच, डिज़ाइनिंग, तामीर, नक्क़ाशी, सब में मुसलमानों का किरदार और हाथ है। यह उस दौर की बात है जब हम हर काम को बेहतर तरीक़े पर अंजाम देते थे, मगर आज जो काम हमारे हाथों में आता है वह और बिगड़ जाता है।

तालीमी संस्था और मकातिब का क़याम जितना मुश्किल नहीं है, इतना मुश्किल काम तालीम के मेयार को बाक़ी रखना है। लेकिन जो लोग पक्के इरादे और लगातार कोशिश से काम लेते हैं, उनके लिए मुश्किलें ख़ुद रास्ता देती चली जाती हैं। आज मिल्लत का एक बड़ा मसला यह है कि इसके तालीमी इदारों का मेयार बहुत पस्त है। वे शहर के अच्छे और मेयारी तालीमी इदारों में शुमार नहीं होते। उनकी तरफ़ समाज का प्रभावी वर्ग रुजू नहीं करता।

क़ौम के इदारे चलाने वालों से मेरी दरख्वास्त है कि स्कूल, कॉलेज इमारत का मेयार भी बेहतर हो, यानी इमारत उसूलों व नियमों के मुताबिक़ हो और सेहत के नियम के मुताबिक़ भी। सफ़ाई सुथराई का सही व्यवस्था हो। और तालीम का मेयार भी बुलन्द हो। आप जो भी पढ़ाएं इतना अच्छा पढ़ाएं कि आपका मक़ाम सबसे ऊँचा हो।

तालीम के मेयार की पस्ती से बच्चे और क़ौम दोनों का पैसा और वक़्त बर्बाद होता है। ऐसी तालीम जिहालत के बराबर है, जिसको हासिल भी किया जाए और आप किसी मेयारी कोर्स के लिए दाख़िले का फ़ार्म भी न भर सकते हों। आपके हाथ में मार्कशीट और डिग्रियाँ भी हों लेकिन इनकी मूल्य काग़ज़ के टुकड़ों के बराबर हो।

तालीम के मेयार की बुलन्दी के लिए क़ाबिल प्रिन्सिंपल और लायक़ शिक्षक नियुक्त कीजिए। एक तालीमी कमेटी बनाकर हर तीन महीने में मुआयना का नज़्म कीजिए। दूसरे अच्छे इदारों की विज़िट कीजिए। शिक्षकों की तर्बियत के लिए कम से कम छः महीने में तीन दिन की ट्रेनिंग का प्रोग्राम कीजिए। तालीम के माहिरीन से लाभ उठाइए। ऐसा नहीं है कि इन कामों में बहुत पैसे ख़र्च होंगे। बहुत कम ख़र्च में भी यह काम अंजाम पा सकते हैं। हमारे देश में बहुत सी संस्था इनका एहतमाम करती हैं उनसे बात चीत कीजिए। आख़िर आपको अपने इदारे को शहर के सबसे अच्छे इदारे के मक़ाम पर लाना है।

●●●

इल्म की तक़्सीम

आज के ज़माने में इल्म इतना फैल गया है कि इसका घेराव करना मुश्किल है। ज़माने की रफ़्तार के साथ इल्म ने भी तरक़्क़ी की है। नई-नई टेक्नोलॉजी ने दुनिया को एक ग्लोबल विलेज में तब्दील कर दिया है। सारी दुनिया एक गाँव बन गई है, संचार (Comunication) के संसाधन बहुत हैं और आसान भी हैं। इल्म के कई विभाग होते जा रहे हैं। पहले एक डॉक्टर होता था जो तमाम बीमारियों का इलाज करता था। नए ज़माने में जिस्म के हर हिस्से का अलग डॉक्टर होता है।

मुसलमान इल्म की तक़्सीम में उलझे हुए हैं। इन उलझनों ने उन्हें पस्ती की तरफ़ धकेल दिया है। मेन स्ट्रीम एजुकेशन को हासिल किए बग़ैर आप देश की मेन स्ट्रीम में शामिल नहीं हो सकते। आप एक तरफ़ ज़मीन पर अल्लाह की हाकमियत क़ायम करना चाहते हैं और दूसरी तरफ़ हुकूमत के निज़ाम चलाने के ज्ञानों से दूरी बनाए हुए हैं। मेरी नज़र में दुनिया के कामों में सबसे अहम काम में हुकूमत का क़ियाम है। ख़ुद नबी[स0] ने हुकूमत क़ायम की। इसके बाद ही दीन के मुकम्मल होने का ऐलान हुआ।

हम देखते हैं कि आज समाज में इल्म और तालीम को इन दो ख़ानों में तक़्सीम कर दिया गया है :

दुनियावी उलूम : इसमें हिसाब (गणित), साइन्स (विज्ञान), जोगरफ़ी (भूगोल), तिब्ब (चिकित्सा), इन्जीनयरिंग (अभियांत्रिकी), मआशियात (अर्थशास्त्र), सियासियात (राजनीतिशास्त्र) वग़ैरह उलूम शामिल हैं। इससे मुराद वह इल्म है, जो दुनिया में काम आता है, दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारते वक़्त मुख़्तलिफ़ मरहलों में इन्सान को इल्म

और नॉलिज की ज़रूरत होती है। इस लिए हर वह इल्म जो दुनिया में ज़िन्दगी बसर करने में मददगार हो वह दुनियावी इल्म में शामिल है।

दीनी उलूम : इसमें क़ुरआन मजीद की तालीम, हदीस व फ़िक़ह की तालीम वग़ैरह शामिल हैं। इस से मुराद वह इल्म है जो दीनी उमूर को अंजाम देने में सहयोगी, हो जिससे एक मुसलमान को मालूम हो जाए कि वह अल्लाह की बन्दगी किस तरह करे, और आख़िरत में कामयाबी किस तरह हासिल करे।

इल्म की इस तक़्सीम ने मिल्लत को बेहद नुक़सान पहुँचाया है। क्योंकि उलमा व दानिशवर सिर्फ़ तक़्सीम पर ही बस करके नहीं बैठे बल्कि दुनियावी उलूम के हुसूल की मुख़ालिफ़त की, जिसने मिल्लत को जिहालत के इस गड्ढे में ढकेल दिया है कि जिससे निकलने में इसे सदियाँ लग सकती हैं।

इल्म की यह तक़्सीम ग़लत है, ग़ैर-इस्लामी है, नबी अकरम[स0] ने सहाबए किराम[रज़ि0] को दूसरी ज़बानें सीखने की तालीम दी, जंगे बद्र के काफ़िर क़ैदियों से सहाबए किराम[रज़ि0] को पढ़वाया और आपने चीन तक जाकर तालीम हासिल करने पर उभारा, यह सब हिदायतें इस बात का प्रमाण हैं कि आपके नज़दीक उस वक़्त के इल्म को हासिल करना ना सिर्फ़ जायज़ था बल्कि ज़रूरी भी था।

इल्म की तक़्सीम अगर हो सकती है तो सिर्फ़ जायज़ व नाजायज़ के बीच हो सकती है। हर वह इल्म जो इन्सानियत की हलाकत व बर्बादी के लिए हासिल किया गया हो, वे नाजायज़ इल्म है। और हर वह इल्म जो इन्सानियत की कामयाबी व फ़ायदे के लिए हासिल किया जाए वे जायज़ इल्म है।

●●●

तालीम और ग़लतफ़हमियाँ

तालीम के ताल्लुक़ से मिल्लत में बहुत से कन्फ़्यूज़न पाए जाते हैं। मिसाल के तौर पर हम समझते हैं कि सिर्फ़ दीनी तालीम का हासिल करना फर्ज़ है। रही दुनिया की दूसरी तालीम इसका पढ़ना सिर्फ़ ज़रूरी नहीं, बल्कि कुछ लोग तो गुनाह समझते हैं। हमने अंग्रेज़ी की मुखालिफ़त की और आज तक कर रहे हैं। हमने हिन्दी को जहन्नम वालों की ज़बान की नज़र से देखा। अब किसी हद तक हिन्दी और अंग्रेज़ी को मदरसों में दाखिल कर लिया गया है। साइन्स पढ़ने को कुफ़्र जाना। नई सांइन्स ईजादात के इस्तेमाल को दुनिया व आख़िरत के लिए मुसीबत समझा।

इस कन्फ़्यूज़न को अब दूर हो जाना चाहिए और एक मुसलमान होने की हैसियत से दीन का इल्म और दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारने और दुनिया की इमामत करने के लिए प्रचलित आधुनिक तालीम हासिल करना चाहिए। यह और बात है कि कुछ लोग दीनी उलूम में माहिर हों और कुछ लोग आधुनिक उलूम में। ज़ाहिर है हर शख़्स एक वक्त में न आलिम हो सकता है, न इन्जीनियर व डॉक्टर और न ही इसकी ज़रूरत है। लेकिन समाज में जो दीनी हल्क़ों की तरफ़ से आधुनिक उलूम की मुखालिफ़त की जाती है उससे मिल्लत को बेहद नुक़सान पहुँचता है, जिसकी भरपाई मुश्किल है।

एक कन्फ़्यूज़न यह है कि पढ़कर क्या होगा। नौकरी तो मिलेगी नहीं, झूठ मूट दस पन्द्रह साल बेकार किए जाऐं। पैसे भी बरबाद हों, उससे बेहतर तो यह है कि बच्चों को काम सिखाया जाए और पैसा कमाने के क़ाबिल बनाया जाए। इस बात को इससे भी ताक़त मिली कि पूरी बस्ती और मौहल्ले में कोई नौजवान पढ़ता रहा उसने बी ए और एम ए किया, घर और ख़ानदान को आशा थी कि बेटे की नौकरी

लग जाएगी, हज़ार जतन के बाद भी नौकरी नहीं लगी, सारी आशाओं पर पानी फिर गया। और बाक़ी बच्चों ने भी तालीम से मुँह मोड़ लिया। यह बात सही है कि हर शिक्षित व्यक्ति को नौकरी नहीं मिल सकती लेकिन यह भी हक़ीक़त है कि नौकरी शिक्षित व्यक्ति ही को मिलती है।

सरकारी मुलाज़िमत के लिए तालीम कोई बहुत अच्छा मक़सद नहीं है। ना ही हमारे बुज़ुर्गों ने इसे बहुत अच्छा जाना है। मेरे ख़्याल में एक ज़माना वह था जब नौकरियाँ ज़्यादा थीं और शिक्षित व्यक्ति कम थे, उस वक़्त नौकरी में आय भी कम थी, लोग नौकरी से ज़्यादा व्यापारी, हुनर व कला को बेहतर समझते थे। आज बड़ी वेतन के साथ बहुत सी सुहूलतें हैं, इस वक़्त नौकरी कम्पिटीशन एक्ज़ाम के बाद मिलती हैं। हमारा मेयारे तालीम पस्त होने की वजह से भी नौकरियाँ नहीं मिलती और ऐसा भी नहीं है कि बिल्कुल नौरियाँ मिलती ही नहीं। आज भी जो छात्र मेयारी तालीम हासिल करके कम्पिटीशन निकालते हैं वे सरकारी नौकरी पाते हैं।

एक ग़लतफ़हमी यह भी है कि आधुनिक तालीम हासिल करके बच्चे हाथ से निकल जाते हैं बड़ों का अदब व एहतराम नहीं करते, उनके अक़ीदे बिगड़ जाते हैं। यह भी एक धोखा है। अक़ीदे व अख़्लाक़ और सीरत व किरदार का ताल्लुक़ ज़्यादातर घर के माहौल से होता है। दूसरी बात यह है कि देश के सरकारी निज़ामे तालीम में तो कोई दीनी तालीम का नज़्म मुमकिन नहीं है और मिल्लत के पास अपने असरी इदारे जिनमें दीन की बुनियादी तालीम का नज़्म नहीं है, तो उनके लिए स्कूल टाइम के बाद बच्चों को दीनी तालीम पढ़ने का नज़्म करना चाहिए।

आधुनिक शिक्षा को हासिल करने में एक ग़लतफ़हमी यह भी है कि इसमें बहुत पैसा ख़र्च होता है। यह बात दुरुस्त है कि आधुनिक शिक्षा के कुछ कोर्सेज़ ऐसे हैं, जिनमें प्राइवेट इदारों में फ़ीस के नाम पर बड़ी रक़म जमा की जाती है। इसका एक हल तो यह है कि हमारे

बच्चे मेहनत करें और अब तो कई इदारे मुफ्त कोचिंग का नज्म करते हैं, उनसे लाभ उठाएं और कम्पिटीशन में बैठें और पास करें ताकि उन्हें सरकारी स्कूल व कॉलेज मिल सकें। इसके अलावा मिल्लत के हमदर्द और दूसरे बहुत सी संस्थाएँ स्कॉलर्शिप भी फ़राहम करती हैं उनसे मिलें। इन्शा अल्लाह कोई न कोई रास्ता निकलेगा। दूसरी बात यह है कि बहुत से कोर्सेज़ ऐसे हैं, जिनमें बहुत कम ख़र्च हैं। बहुत से छोटे-छोटे डिप्लोमा कोर्सेज़ हैं, जो कम ख़र्च में हो सकते हैं इस किताब में ऐसे बहुत से कोर्सेज़ की निशान दही आगे पृष्ठों में की गई हैं।

एक शिकायत मुझे माँ-बाप से है वह यह कि हमारे माँ-बाप तालीम के लिए बजट नहीं बनाते, वक़्त पर फ़ीस अदा नहीं करतें, मकान, व्यापारी, शादी और विवाह यहाँ तक कि लड़ाई झगड़े में बहुत पैसे ख़र्च करते हैं। लेकिन तालीम में पैसा ख़र्च करने को बेकार समझते हैं। अगरचे सारे माँ-बाप ऐसे नहीं हैं, लेकिन यह संख्या 95% से अधिक है।

एक शिकायत मुझे अपने छात्र से है, हमारे बच्चे जब पढ़ते हैं तो यह समझते हैं कि वे माँ-बाप पर एहसान कर रहे हैं। हालाँकि यह तालीम या तो उनके अपने काम आएगी या उनकी औलाद के, माँ-बाप के किसी काम न आएगी। वे तो कब्र में चले जाएंगे। इस रवैये का नतीजा है कि वे घर के किसी काम में हाथ नहीं बटाते, कोई काम तालीम के बीच ऐसा नहीं करना चाहते कि तालीम ख़र्चे जमा हो सकें, सारा ख़र्च अकेले बाप पर आ जाता है। वह हिम्मत हार जाता है और यूँ ज़िन्दगी की गाड़ी रुक जाती है। अगर हमारे बच्चे जूनियर हाई स्कूल यानी आठवीं के बाद टेलरिंग, मोबाईल साज़ी, हेयर कटिंग और इलेक्ट्रॉनिक वग़ैरह में से कोई एक काम सीख लें, जिसे वे दो साल में सीख सकते हैं। उधर वे दसवीं पास कर लेंगे तो आगे की तालीम का ख़र्च माँ-बाप पर नहीं पड़ेगा। इस तरह उसकी तालीम भी हो जाएगी और मेहनत के पैसे से हासिल की हुई तालीम का नतीजा भी बहुत अच्छा होगा। ●●●

मौअस्सिर अवामिल (प्रभावी गुण)

इन्सान एक समाजी जानदार है। वह जब पैदा होता है तो उसकी परवरिश समाज मिलकर करता है। उसकी शख़्सियत की तामीर में समाज के बहुत से इदारे असर अंदाज़ होते हैं। इसमें सबसे पहला फेक्टर उसका घर और ख़ानदान है। घर का माहौल घर वाले के अख़्लाक़ व आदात, उनके मामलात, उनकी सोच और फ़िक्र सब बच्चे पर गहरे असर छोड़ते हैं। और बच्चा सबसे ज़्यादा घर से सीखता है। बच्चे की माँ उसका पहला मदरसा होता है। हमारे समाज में गर्भ के वक़्त कोई मन्सूबा बन्दी नहीं होती, यहाँ न गर्भ माँ की परवाह होती है और न माँ के पेट में बच्चे के स्वागत की ख़ास तैयारी। पैदा होने के बाद वाहियात किस्म की रसमें, दर्जनों अंजाम दी जाती हैं, मगर यह कोई नहीं सोचता कि अब इस बच्चे को किस तरह एक बड़ा इंसान बनाना है। अगर काई तवज्जोह दिलाता भी है तो तक़दीर पर ईमान रखते हुए सब कुछ अल्लाह के सुपुर्द कर दिया जाता है। और फिर वह तक़दीर के भरोसे ही आगे की मंजिलें तय करता है, जिसका नतीजा सब के सामने है।

घर वालों की ज़िम्मेदारी है कि वे माँ के पेट में ही बच्चे और उसकी माँ का ख़्याल रखें। इस बीच माँ जिस तरह के ख़्यालात रखेगी वैसा ही दिमाग़ लेकर बच्चा पैदा होगा। यहूदी लोग ऐसे वक़्त में माँ से गणित के प्रश्न हल कराते हैं। उसे अध्ययन कराते हैं, मग़ज़यात खिलाते हैं। और डॉक्टर की हिदायत के मुताबिक़ अच्छा भोजन फ़राहम करते हैं, ताकि बच्चा दिमाग़ी और जिसमानी तौर पर तन्दरूस्त हो। एक बच्चे का दुनिया में आना कोई मामूली बात नहीं है। यह वही बच्चा है जिसके लिए ख़ुदा ने कायनात सज़ाई, अम्बिया, रसूल भेजे, अगर आप

चाहें तो इस बच्चे को साहिबे कमाल बना सकते हैं। जिससे इन्सानियत को फ़ायदा पहुँचे और आपकी बे-ध्यानी इसको समाज के लिए नुक़सानदेह भी बना सकती है। इसलिए नबी[स0] ने फ़रमाया ''हर बच्चा इस्लाम की फ़ितरत पर पैदा होता है, माँ-बाप उसे यहूदी या नसरानी बना देते हैं''।

दूसरा सबसे बड़ा फ़ेक्टर जो बच्चे की तालीम व तर्बियत और शख़्सियत साज़ी में अहम रोल अदा करता है, वह समाज है। बच्चा जब कुछ बड़ा होता है तो वह घर से बाहर क़दम निकालता है और बाहर की दुनिया देखता है। मौहल्ले के माहौल का असर उस पर पड़ता है और वह इसको क़ुबूल भी करता है। हम मुस्लिम मौहल्ले की गन्दगीयों से ख़ूब अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं, बच्चे ही क्या बड़े भी बीड़ी सिगरेट पीने में लगे हुए हैं, बात-बात पर गालियाँ दे रहे हैं, बच्चा यह सब कुछ देखता और समझता है और फिर नक़ल करता है।

कोशिश करनी चाहिए कि बच्चे को कम-से-कम बाहर भेजा जाए। आप इसके खेल खिलौने का नज़्म घर के अन्दर ही कर दें। इसके साथ खेलने का वक़्त निकालें, अगर बाहर जाए तो अपने साथ लेकर जाऐं, वहाँ जो अच्छी चीज़ें हैं, उनकी तरफ़ उसका ज़ेहन मबज़ूल (DIVERT) कराऐं और बुराइयों से नफ़रत दिलाऐं तो उम्मीद की जा सकती है कि वह मौहल्ले के बुरे असरात कम क़ुबूल करेगा।

तीसरा बड़ा फ़ेक्टर उसका स्कूल। स्कूल के चुनने में सोच विचार से काम लिया जाए। स्कूल का चयन करते वक़्त आपके सामने मक़सद तालीम रहना चाहिए, आपको मालूम होना चाहिए कि आप अपने बच्चे को क्यों पढ़ाना चाहते हैं? क्या बनाना चाहते हैं? आपके सामने यह बात रहनी चाहिए कि बच्चे को एक मुसलमान की हैसियत से किस तालीम की ज़रूरत है और मुल्क का एक अच्छा शहरी बनने के लिए किन उलूम की ज़रूरत है। बग़ैर सोचे समझे किसी भी स्कूल में

दाख़िल कर देने से और फिर साल दो साल में स्कूल तब्दील करते रहने से तालीम और तर्बियत दोनों मुतास्सिर होते हैं।

मिल्लत की बहुत से लोग न तो स्कूल का सही चयन करती है। न इसके सामने मक़ासिद होते हैं। बस किसी भी वजह से किसी भी स्कूल में दाख़िल करके छोड़ दिया जाता है। स्कूल में जाकर अपने बच्चे की रिपोर्ट कार्ड देखने वाले माँबाप नहीं के बराबर हैं। बहुत से माँ-बाप को तो अपने बच्चों की क्लास तक मालूम नहीं और कितने ही ऐसे हैं, जो स्कूल का नाम भी नहीं जानते। इस तरह लापरवाही से तालीम दिलाना वक़्त बरबाद कर देने के बराबर है।

बच्चों की तालीम पर हुकूमत की तालीमी पॉलेसियाँ भी असर अंदाज़ होती हैं। एक वक़्त था कि शिक्षक बच्चे को ग़लती करने पर सज़ा दे सकता था, अब सज़ा देने पर पाबन्दी है। एक वक़्त था कि बच्चे को फेल होने का डर सताता था। अब आठवीं दर्जे तक फेल होने का कोई ख़तरा नहीं। ज़ाहिर है न शिक्षक का डर, न फेल होने का डर तो फिर बच्चा क्यों पढ़े, इसका नतीजा है कि सरकारी स्कूलों में तालीम हासिल करने वाले बच्चे आठवीं जमाअत पास कर लेते हैं और सही तरीक़े पर अपना नाम भी नहीं लिख पाते। क़ौम के बड़े लोगों को चाहिए कि वे सरकारी तालीमी पॉलिसी पर नज़र रखें और ऐसे नियम की मुख़ालिफ़त करें, जो बच्चे के भविष्य को बरबाद करने वाली हो।

●●●

तालीम के रास्ते में रुकावटें

आम तौर पर तालीम हासिल करने के रास्ते में निम्नलिखित रुकावटें आती हैं :

माल की कमी

किसी की तालीम में सबसे बड़ी रुकावट पैसे की आती है। आप कह सकते हैं कि मेरे पास पैसे नहीं हैं, इसलिए में पढ़ नहीं सकता, या मैं अपने बच्चे को पढ़ा नहीं सकता। इस सिलसिले में बातें बातें अर्ज़ हैं :

- हुकूमत की तरफ़ से RTE एक्ट के पास हो जाने के बाद बच्चों की इब्तदाई तालीम का व्यवस्था करना हुकूमत की ज़िम्मेदारी है। यह बच्चों का हक़ है कि इसकी तालीम का सही, मुनासिब और मुफ्त इन्तिज़ाम किया जाए। अगर एक छात्र भी किसी जगह होगा तो हुकूमत उसकी तालीम का इन्तज़ाम करने की पाबन्द है।
- प्राइमरी से इन्टर तक तालीम मुफ्त है। सरकारी स्कूल लगभग हर बस्ती में है या क़रीब की बस्ती में है।
- मदरसे की तालीम मुफ्त है, वहाँ भी इब्तदाई दर्जात में जो तालीम दी जाती है, उसे हासिल करने के बाद मिडिल स्कूल में दाखिला लिया जा सकता है।
- इन्टर (12^{th}) के बाद आगे की तालीम के लिए अल्पसंख्यक छात्र के लिए केन्द्रीय और राज्य स्तर पर स्कॉलर्शिप का नज़्म है, जो फ़ीस आप स्कूल में जमा करेगें वही आपको वापस मिल जाएगी।

- इन्टर के बाद पार्ट टाइम कुछ काम करके भी इतना पैसा हासिल किया जा सकता है कि आप आगे की तालीम हासिल कर सकते हैं।
- इन्टर के बाद अगर घर की माली हालत इजाज़त न दें तो फ़ासिलाती (पत्रचार) निज़ामे तालीम (**DISTANCE EDUCATION**) (दूर-शिक्षण) से लाभ उठाया जा सकता है।
- अगर आप ज़हीन हैं और इन्टर के बाद किसी प्रोफ़ेशनल कोर्स का एन्ट्रेन्स एक्ज़ाम आपने पास कर लिया है तो मुस्लिम संस्थाएं भी और अन्य बहुत सी संस्थाएं आपकी मदद को तैयार हैं।
- मदरसा एजुकेशन चाहें आप कितनी ही हासिल करें, तख़स्सुस करें, इफ़्ता कर लें अगर आप ग़रीब हैं और ज़हीन हैं तो तालीम मुफ़्त है, कोई पैसा आपका ख़र्च नहीं होगा। मदरसा एजुकेशन के बाद भी बहुत सी युनिवर्सीटयों से आधुनिक तालीम हासिल कर सकते हैं। ऐसे कई मदरसे और संस्थान हैं, जिनका देश में बड़ी युनिवर्सीटयों से सम्बद्ध है।
- तमाम ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन कोर्सेज़ मामूली फ़ीस पर किए जा सकते हैं।

बच्चे के अन्दर दिलचस्पी की कमी

एक रुकावट यह है कि कुछ बच्चे पढ़ने की तरफ़ बिल्कुल ध्यान नहीं देते। वे या तो स्कूल मदरसे के माहौल से घबरा कर या बुरे दोस्तों की सोहबत में पड़कर तालीम से ताल्लुक़ तोड़ लेते हैं। ऐसे छात्र के मां-बाप को चाहिए कि वे मौहब्बत और नरमी से बच्चे को समझाए। अगर वे पढ़ने में कमज़ोर हैं और क्लास में उसको शर्मिन्दगी का सामना है तो टयूशन लगवा कर कमज़ोरी दूर करें, या किसी दूसरे स्कूल में एक दो दर्जे पीछे दाख़िला लेकर भी उसका हौसला बढ़ाया जा सकता है। बुरे दोस्तों की सोहबत से उसको धीरे-धीरे अलग करें। दूसरी बात यह

है कि अगर वह बिल्कुल पढ़ने से मना कर दे तो उसको ज़बरदस्ती न पढ़ाऐं वर्ना वक़्त और पैसा दोनों बरबाद होगा। उसको कोई काम सिखा दें आजकल हुकूमत की तरफ़ से स्किल डेवलपमेन्ट (कौशल विकास) के बहुत से प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं, वहाँ काम भी सीखेगा और सर्टीफिकेट भी हासिल करेगा, उम्र के जिस हिस्से में भी वह तालीम की तरफ़ उत्तेजित हो उसको पढ़ने दें। अब सरकारी स्तर पर इसका प्रबंध है, ओपन स्कूलिंग सिस्टम में यह नज़्म है।

माँ-बाप में ख़्वाहिश की कमी

हर माँ-बाप की ख़्वाहिश और इच्छा होती है कि उसका बच्चा पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बने। ऐसा बहुत ही कम होता है कि कोई अपने बच्चे को पढ़ने से रोके, इसकी एक ही वजह होती है और वह माल की कमी। कुछ अधिक औलाद वाले लोग चाहते हैं कि उनके बच्चे कारोबार में उनका हाथ बटाएँ। अगर मान लें ऐसा है कि आप पढ़ना चाहते हैं और आप के माँ-बाप राज़ी नहीं हैं तो इसका एक तरीक़ा यह है कि आप बाप का हाथ बटाएँ और फ़ासिलाती निज़ामे तालीम, या प्राइवेट निज़ामे तालीम के तहत अपनी तालीम जारी रखें। आप बाप को यक़ीन दिलाएँ कि आपकी तालीम का माली बोझ उन पर नहीं पड़ेगा। आप अपने किसी दोस्त या रिश्तेदार के ज़रिए भी बाप से बात कर सकते हैं।

गाइडेन्स की कमी

मुस्लिम बच्चों की उच्च शिक्षा) में एक रुकावट रहनुमाई का न मिलना है। बच्चों को सही वक़्त पर सही रहनुमाई नहीं मिलती इसलिए वे तालीम हासिल नहीं कर पाते। इसके लिए ज़रूरी है कि माँ-बाप ख़ुद या अपने किसी तालीम याफ़ता दोस्त और रिश्तेदार से ताल्लुक़ रखें, इनसे बराबर रहनुमाई लेते रहें। अब तो ज़्यादातर शहरों में केरियर गाइडेन्स के केन्द्र क़ायम हैं, वहाँ से भी यह काम हो सकता है। अपने

बच्चे के शिक्षों से भी ताल्लुक़ रखकर यह काम हो सकता है। बच्चा आपका है, फ़िक्र आपको करना है, चलकर आप को जाना पड़ेगा, कोई रहनुमाई करने आपके घर नहीं आएगा। इन्टरनेट के ज़माने में सारी मालूमात आपके हाथों में है, मोबाइल ऑन कीजिए और ज़रूरत के मुताबिक़ तालीमी रहनुमाई और गाइडेन्स हासिल कीजिए।

मेयारी स्कूलों की कमी

बच्चों की तालीम में एक रुकावट अच्छे और मेयारी स्कूल का न होना भी है। यह परेशानी आम तौर पर गाँव में आती है। बड़े शहरों में तो अच्छे और मेयारी स्कूल होते हैं, वहाँ यह मसला तो हो सकता है कि सीटें कम होने के कारण दाख़िले न हों, लेकिन बच्चा अगर टेस्ट निकाल ले तो दाख़िला हो सकता है। रहा उन जगहों का मसला जहाँ इस तरह के स्कूल नहीं हैं, पहले तो वहाँ के ज़िम्मेदारों को ऐसे स्कूल की तामीर की तरफ़ तवज्जोह देना चाहिए। दूसरे जो स्कूल हैं, उनके ज़िम्मेदारों से मिल कर उनके मेयार पर तवज्जोह करना चाहिए। तीसरा और आख़िरी दर्जा यह है कि बच्चे को घर पर ख़ूब मेहनत कराके इस कमी को दूर करना चाहिए।

●●●

एहसासे कमतरी (हीन भावना) से निकलें

आधुनिक शिक्षा प्राप्त मुस्लिम नौजवानों की वह संख्या जो अपने इतिहास से वाक़िफ़ नहीं हैं, एहसासे कमतरी के शिकार हैं। वह आज की मार्डन दुनिया को देखती हैं, साइन्स की ईजादात और टेक्नॉलोजी को देखती हैं। स्कूल, कॉलेज, युनिवर्सीटयों में जो निसाब पढ़ती है, उन सब में उनको अंग्रज़ों के कारनामे देखने और पढ़ने को मिलते हैं। वे नोबुल प्राइज़ की सूची देखती है और उसमें अपना नाम नहीं पाती तो एहसासे कमतरी का शिकार हो जाती है और कह उठती है ''हमें नोबुल क्यों नहीं''?

यह हक़ीक़त है कि आज के मुसलमान तालीमी पिछड़ेपन का शिकार हैं। वह आज की दुनिया में कोई Contribution नहीं कर रहे हैं। हमारे ज़माने की नित नई ईजादात और उलूम व फ़ुनून (ज्ञान व कला) की तरक़्क़ी में इनका किरदार क़ाबिले ज़िक्र नहीं हैं। इस तस्वीर को देखकर एहसासे कमतरी, पस्त हिम्मती और दूसरों के मुक़ाबले ख़ुद को हक़ीर और तुच्छ समझने का एहसास पैदा होना स्वाभाविक है। लेकिन क्या मुसलमान हमेशा से ही ऐसे हैं? क्या इन्होंने कभी कोई नुमायाँ काम नहीं किया? अगर इसका जवाब हाँ में है तो फिर आधी दुनिया से ज़्यादा आबादी पर लगभग एक हज़ार साल हुकूमत मुसलमान केसे करते रहे ?

इसलिए हमारी एक ज़रूरत यह भी है कि हम अपने नौजवानों को उनके इतिहास से आगाह करें, उन्हें कम-से-कम नबी करीम[सल0] की पैदाइश के बाद से लेकर ख़िलाफ़त के ख़त्म होने यानी 1923 ई0 तक का इतिहास पढ़ाएँ। इस तारीख में उनको हम अपनी ख़ूबियाँ और महान कारनामे भी बताएँ और कमज़ोरियाँ भी गिनाएँ। हम अपने उरुज (उत्थान) की दास्तान भी सुनाएँ और अपने ज़वाल (पतन) के असबाब

भी बताएँ, ताकि आज का नौजवान एहसासे कमतरी के गार से निकलकर फ़िक्र की बुलन्दियों को छूने की तमन्ना करे, अपनी ग़लतियों से सबक़ सीखकर आगे बढ़ने का इरादा व साहस करे।

इतिहास के पन्नों पर मुसलमानों की इल्मी शान व शौकत के बुलन्द मीनारें जब आप देखेंगे तो आप की नज़र चकाचौंध हो जाएगी। हमारे इतिहास के कितने ही अध्याय इतने रौशन हैं कि जिससे आज का यूरोप जगमगा रहा है। मेडीकल की दुनिया में, फ़लसफ़ा के मैदान में, समाज के सुधार के ताल्लुक़ से, तालीम के अध्याय में, फ़न्ने तामीर में, रिफ़ाही राज्यों के चलाने में, निज़ामे हुक्मरानी में और इन्सानियत की कामयाबी के लिए मुसलमानों ने बहुत से बुनियादी काम किए। इन बुनियादों पर बाद में यूरोप ने अपनी शानदार इमारतें खड़ी कर दीं। आप जब इतिहास के पन्ने पलटेंगे तो तालीम याफ़ता सहाबा-ए-किराम, फुक़हा, हदीस की इमामों से लेकर अबू बक्र ज़करीया राज़ी, अब्बास इब्ने फ़रनास और इब्ने सीना जैसे सैंकड़ों नाम नज़र आएंगे और आप एहसासे कमतरी से निकल फख्र व इफ्तखार की ऊंचाई पर पहुँच जाएंगे।

दोस्तो! क़ौमों की ज़िन्दगी में उतार-चढ़ाव आते हैं। कभी यही अंग्रेज़ और यहूदी तारीकी के ग़ार में थे, आपस में लड़ते थे, अन्धविश्वासी थे। इसलिए अल्लाह ने अपनी सुन्नत के मुताबिक़ उन पर आपको प्रभुत्व अता किया और आप हर ज़िंदगी के हर मैदान के इमाम बन गए।

एहसासे कमतरी से निकलिए, इतिहास से सबक़ हासिल कीजिए और क़ौम की तस्वीर बदलने के लिए रोड मैप बनाइए। अपने मुक़ाबिल क़ौम के मुक़ाबले में आइए। आप अपने अन्दर देश सम्भालने और चलाने की क्षमता पैदा कीजिए। इमामत व क़ियादत (नेतृत्व) आपकी मुन्तज़िर है।

●●●

और कहीं ज़ातें हैं .....

उपमहाद्वीप (भारत व पाकिस्तान) के मुसलमानों को पसमान्दगी के ग़ार में ढकेलने वाला एक सबब ज़ात पात सिस्टम भी है। ताज्जुब है कि इस्लाम में क़बीला, ख़ान्दान और ज़ात को सिर्फ़ पिचय के लिए और नबी[स0] ने तमाम पक्षपात को हिज्जतुलविदा के मौक़े पर अपने क़दमों से कुचल डाला था, मगर हमारे यहाँ ज़ात पात की जड़ें आज भी बहुत गहरी हैं और इन जड़ों को कुछ मज़हबी रहनुमाओं के लेखों ने ताक़त दी है। छूत-छात की बीमारी तो नहीं है लेकिन ज़ात बिरादरी के नाम पर बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं, जो मिल्लत के लिए बहुत नुक़सानदेह हैं।

ज़ात के ताल्लुक़ से एक बात तो यह है कि कुछ लोग ख़ुद को बरतर और दूसरों को कमतर समझते हैं। इनका यह समझना उनके रवैये से ज़ाहिर हो जाता है। ग़ैर ज़ात में शादी करने को ऐब शुमार किया जाता है। बड़े शहरों में तो यह बात ज़रा कम हो रही है, लेकिन छोटे शहरों, क़स्बों और गाँओं में तो कुछ लोग पेशावर बिरादरियों के लोगों को हिक़ारत से देखते हैं और उनके असल नाम के बजाए पेशे के नामों से पुकारते हैं, जिससे सामने वाले को ज़ेहनी तक्लीफ़ होती है। बिरादरी के नाम पर अन्जुमनें क़ायम हैं, बिरादरी के नाम पर मदारिस क़ायम हैं और फिर उनके बीच नफ़रत का जज़्बा है। बिरादरी के नाम पर किसी इदारे का क़याम बुरा नहीं लेकिन नफ़रत का तत्व बहुत नुक़सानदेह है।

इस्लाम ने रंग, नस्ल और ज़ात के नाम पर यहां तक कि मज़हब के नाम पर भी इन्सानों में ऊँच-नीच नहीं रखी है। तमाम इन्सान आदम की औलाद हैं, सारे इन्सानों में आदमियत और

इन्सानियत का रिश्ता है। हां, अल्लाह से जो .ज्यादा डरता है वह बुलन्द है। अगर कोई बरतरी है वह भी अल्लाह के यहाँ, दुनिया में तक़वा की बुनियाद पर भी किसी को बरतरी जताने का हक़ नहीं है। न तक़वा वाले को यह इख़्तियार है कि वे दूसरों को कमतर, हक़ीर समझें। तक़वा की बुनियाद पर इनाम व इकराम या तो ज़ाती तौर पर दुनिया में होंगे या इस शख़्स को आख़िरत में सवाब से नवाज़ा जाएगा। यहाँ तो इन्सान की हैसियत से इन्सानी हुक़ूक़ में सब बराबर हैं और मुसलमान होने की हैसियत से शरई मामले में बराबर हैं।

मुस्लिम शासन काल से लेकर आज़ादी 1947 ई0 तक आम तौर पर आला ज़ात के लोग ही सत्ता के हक़्दार रहे। उनके पास ही इल्म रहा और इल्म की वजह से वसाइल का अधिक्तर हिस्सा उनके पास रहा और आज तक है। उन आला ज़ात के लोगों ने छोटी ज़ात के लोगों की तालीम व तर्बियत पर तवज्जोह नहीं दी। अगर तवज्जोह दी जाती तो आज क़ौम की हालत बदली हुई होती। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट के मुताबिक़ ज़्यादा पिछड़ापन पेशेवर बिरादरियों में ही है। आला ज़ात और छोटी ज़ात में समाजी ताल्लुक़ की कमी की वजह से दोनों में बहुत दूरियाँ पैदा हो गईं। इस दूरी ने एक दूसरे को फ़ायदा उठाने से महरुम रखा। मेरे क़स्बे में मौहल्ला क़ाजी है, इसमें सैयद हज़रात रहते हैं, इस मौहल्ले के आस-पास चारों तरफ़ पेशेवर बिरादरियों के लोग रहते हैं। सैयद हज़रात सब उच्च शिक्षा प्राप्त लोग हैं और पेशेवर बिरादरियों के लोग ज़्यादातर अनपढ़ हैं। यह इसी कम्युनिकेशन गैप का नतीजा है।

आज तालीमी पिछड़ेपन को दूर करने के लिए सेमिनार व वर्कशॉप होते हैं, उनमें प्रोग्राम बनते हैं। उनकी क़यादत भी .ज्यादातर उच्च ज़ात के लोग ही करते हैं। लेकिन कम्युनिकेशन गैप की वजह से ज़मीन पर मन्सूबे फ़नाफ़िज़ (लागू) नहीं हो पाते। छोटी बिरादरियों की पिछड़ेपन में सारी ग़लती उच्च ज़ात का ही नहीं है, बल्कि 'मैं आरोप

उसको देता था क़ुसूर अपना निकल आया' की तरह इन बिरादरियों के लोगों को भी अपना मुहासबा करना चाहिए और अपनी कोताही, और सुस्ती व ग़फ़लत को दूर करना चाहिए। ख़ास तौर पर मेरी गुज़ारिश इन बिरादरियों के अध्यक्षों और चौधरियों से है कि अगर आप अपनी पसमान्दगी दूर करना चाहते हैं तो उच्च ज़ात के लोगों से रिश्ता बनाइए, मौहब्बत कीजिए, नफ़रत का माहौल ख़त्म कीजिए और उनसे इस्तिफ़ादा (फ़ायदा हासिल) कीजिए। क्योंकि कुआँ प्यासे के पास नहीं आता बल्कि प्यासे को कुएँ के पास आना पड़ता है।

मुसलमानों को अपने अन्दर से बिरादरी के पक्षपात ख़त्म करना चाहिए। इल्म और अमल की बुनियाद पर एक दूसरे की क़द्र करनी चाहिए, किसी को भी हक़ीर नहीं जानना चाहिए। बिरादरी की तक़्सीम ऐसी न हो कि इस्लाम के भाई चारे के रिश्ते के रास्ते में रुकावट बन जाए। इस्लाम और ईमान की दीवार बिरादरी की दीवार से ऊँची हो, एक दूसरे के साथ ज़रूरत के मुताबिक़ शादी ब्याह भी किए जाएँ। विचार भी प्रकट किए जाएँ, मशवरे भी दिए जाएँ। किसी गोरे को किसी काले पर कोई फजीलत (प्राथमिकता) नहीं है। किसी अरबी को अज्मी पर कोई बरतरी नहीं है। किसी मालदार को किसी ग़रीब पर कोई बड़ाई हासिल नहीं है। अगर हमारे बीच कोई बड़ा है तो वह है जो अल्लाह से डरते हुए इन्सानियत की ख़िदमत कर रहा है। लोगों के काम आ रहा है। लागों की ज़रूरतें पूरी कर रहा है। अल्लामा इक़्बाल[रह0] का शेर है :

फ़िरक़ा बन्दी है कहीं और कहीं ज़ातें हैं,
क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं।

●●●

खेल और तालीम

खेल तालीम का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अब तो खेल भी एक इन्डस्ट्री बन गया है और इस मैदान में भी लोग मोटे धन कमा रहे हैं। खेल से सेहत भी बनती है और केरियर भी। खेल के सर्टिफ़िकेट नौकरियों को हासिल करने में भी काम आते हैं। और उच्च तालीम हासिल करने के रास्ते में भी। हमारे बीच एक बड़ा वर्ग खेल को फ़ुजूल चीज़ समझता है। हमें चाहिए कि हम इस विभाग को संगठित करें, खेल एकेडमी क़ायम करें। अपने स्कूलों में गेम्स टीचर नियुक्त करें। वे छात्र जो खेल में दिलचस्पी लेते हैं और उनके अन्दर क्षमता भी है, उनकी तर्बियत का इन्तज़ाम करें, उनको गाइड करें। देश में बहुत से मौक़े हैं जहाँ अपनी परफ़ॉरमेन्स (प्रदर्शन) साबित की जा सकती है। खंड, तहसील, ज़िला, राज्य, राष्ट्रीय स्तर पर भी खेलों के मुक़ाबले होते हैं, उनमें शिरकत की जाए, मेहनत से नुमायाँ कारकद्रगी का मुज़ाहिरा किया जाए। क़ौम के नौजवानों में बहुत क्षमता है जिस्मानी तौर पर मुसलमान मज़बूत क़ौम हैं, इसलिए इस मैदान में आगे बढ़ने के मौक़े हैं। कुछ खेल आपकी सुरक्षा वाली ज़रूरत को भी पूरा करते हैं, मिसाल के तौर पर जूडो कराटे, बॉक्सिंग, वग़ैरह। फिर भी जहाँ-जहाँ मुमकिन हो खेल के क्षेत्र को बढ़ाया जाए।

●●●

सक़ाफ़ती (सांस्कृतिक) सरगर्मियाँ

हर स्कूल और तालीमी इदारे में सांस्कृतिक सरगर्मियाँ अंजाम दी जाती हैं। इन सरगर्मियों के ज़रिए बच्चे की सलाहियतें निखरती हैं उनका आत्मविश्वास और होसला बढ़ता है। स्टेज पर आकर बोलना उन्हीं लोगों को आता है, जिन्होंने स्कूल लाइफ में स्टेज पर कुछ बोला हो। वर्ना अच्छे-अच्छों के पांव डगमगा जाते हैं।

आजकल सक़ाफ़ती सरगर्मियों के नाम पर मग़रिबी तहज़ीब की बेहयाइयाँ मन्ज़रे आम पर लाई जा रही हैं।

एक स्कूल के वार्षिक फंक्शन में शिरकत का मौक़ा मिला। कुल 46 प्रोग्राम बच्चों ने पेश किए। उनमे 42 प्रोग्राम डांस के थे। मैंने प्रिन्सपल साहब से पूछा आपके स्कूल में डांस का सब्जेक्ट होगा। उन्होंने नहीं में सर हिलाया तो मैंने मालूम किया समाज में डान्सरों की ज़रूरत और डिमॉन्ड ज़्यादा होगी, बोले नहीं ऐसा नहीं है। मैंने कहा तो डांस से बच्चों का भविष्य रौशन होता होगा, उन्हें नौकरी जल्दी मिलेगी बोले ऐसा भी नहीं है। मैंने कहा 46 में से 42 प्रोग्राम तो यही ज़ाहिर करते हैं।

सक़ाफ़ती सरगर्मियों में अख़्लाक़ियात (नैतिकता), स्कूल के मक़ासिद, समाज की ज़रूरत का ख़्याल ज़रूर रखना चाहिए। समाज में जो कुछ चल रहा है सब अमल करने योग्य नहीं है। सक़ाफ़ती सरगर्मियों में तक़रीर, नज़्म व ग़ज़ल ख़्वानी, ड्रामे, मुकालमे, मबाहिसे, बेतबाज़ी, कॉमेडी, क़व्वाली, पेंटिंग, खेलकूद, मज़मून निगारी और

लतीफ़ा गोई वग़ैरह प्रोग्राम रखे जायें, ताकि बच्चा आगे चलकर इन मैदानों में ख़ूब तरक़्क़ी कर सके। छोटे बच्चों के एक दो प्रोग्राम डांस के भी हो सकते हैं। सक़ाफ़ती सरगर्मियों के लिए अन्जुमन बनाई जाए। बच्चे ही इसके अध्यक्ष और सेक्रेट्री हों, इससे उनके अन्दर क़ायदाना सलाहियत पैदा होगी।

हर स्कूल में बच्चों का सामाचार पत्र निकाला जाए, Wall bulltin कम ख़र्च में निकल सकता है और अधिक बच्चे उसमें शामिल हो सकते हैं।

●●●